परिवर्तन और प्रणाली

Changes & System

एक चूक इंसान को धरातल पर पटक देती है।

—राम बजाज

कामयाब इंसान का एक फैसला
आपकी जिन्दगी बदल सकता है।

—राम बजाज

सिर्फ धन नहीं, बुद्धि ही इंसान को धनवान बनाती है।

—राम बजाज

परिवर्तन और प्रणाली
Changes & System

अक्सर 99.99,99 फीसदी इंसान पुरानी योजनाओं और परम्परागत ढर्रे के हिसाब से ही जिन्दगी गुजारते हैं। सदियों से चली आ रही पारम्परिक प्रणालियों (Systems) के पीछे पागलों की तरह भागते रहते हैं। उनको कोई बदलाव या परिवर्तन मंजूर ही नहीं होता। इसमें कोई शक नहीं कि मनुष्य परम्पराओं को बनाता है और वही उन्हें बदल सकता है। बुरी और पुरानी प्रणाली तरक्की की राह में रोड़ा होती है।

महान् आविष्कारक और अमीर इंसान के रास्तों पर
कालीन नहीं बिछी होती।

—राम बजाज

औसतन आदमी कौन ?
Who is an average person?

किसी छोटे कस्बे या खास समुदाय में लोगों के काम करने के तरीकों की प्रणालियां व उपसंस्कृतियां बन जाती हैं, जो अलिखित परन्तु प्रचलित मान्यताओं पर टिकी होती हैं। हर समुदाय में उन लोगों का बहुमत होता है जो आगे बढ़ने के बड़े सपने नहीं देखते। याद रखें, औसतन होना एक बीमारी है, पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलने वाली एक खतरनाक बीमारी। आपकी समस्या यह नहीं है कि आप बहुत व्यस्त, तनावग्रस्त या बहुत गरीब हैं, बल्कि आपकी समस्या यह है कि आपका अपना कोई सोच ही नहीं है या फिर आप गरीबों की तरह सोच रहे हैं। फिर भी चेतावनी के साथ याद रखें कि इसे आपने ही चुना है।

देखा जाये तो आदमी बनने में औसतन कुछ भी खर्च नहीं होता, इसलिए आप बड़े आराम से औसतन आदमी बन जाते हैं। परन्तु अगर आप इसे दूसरे पहलू से देखें तो औसतन आदमी बन जाने के बाद आप गरीबी के जाल में फंस जायेंगे और अमीरी की एक–दो सीढ़ी तक भी चढ़ नहीं पायेंगे, चोटी पर चढ़ने की बात तो सोचने के दायरे से बाहर की होगी। अमीरी की सफलता पाने की राह में जितनी मुश्किलें आती हैं उससे ज्यादा मुश्किलें जिन्दगी–भर गरीबी झेलने में आती हैं। यह जानने के बाद भी आप अपने पुराने सोच और प्रणाली (System) को नहीं बदलना चाहेंगे ? इसके लिए आपको नई मान्यताओं और प्रणालियों को जीवन में उतारने के लिए सचमुच तैयार रहना ही होगा। कुएं के मेढक की तरह अपने दिमाग को किसी गड्ढे में कैद मत करें।

आपकी अमीरी का पैमाना आपके नए परिवर्तन और काम करने की नई प्रणालियों के तरीकों से जुड़ा हुआ है। आपको अब यह सीखना चाहिए कि प्रणालियों (Systems) में क्या तबदीली करनी है।

मेहरबानी करके जान लें कि इक्कीसवीं सदी में बहुत बड़े–बड़े परिवर्तन हुए हैं। एक पीढ़ी को देखते–देखते हम घोड़ों से उतरकर कारों में सवार हो गये और फिर हवाईजहाजों और रॉकेट पर। पिछले कुछ सालों में तरक्की की रफ्तार खास तौर पर तेज हुई है। हमें यह जानना और समझना चाहिए कि हम नये जमाने में रह रहे हैं और पुराने जमाने के

विचार अब हमारे काम नहीं आयेंगे। महान् आविष्कारक और अमीर इंसानों के रास्तों पर कालीन नहीं बिछी होती। उन्होंने आसान रास्तों पर चलकर कामयाबी हासिल नहीं की। वे स्वीकृत मान्यताओं और विचारों के विरोध के कंटीले रास्तों पर चलकर कामयाब हुए हैं।

अगर आप समय रहते नहीं बदले तो जीवन की धारा आपको बदल देगी और वह भी आपकी शर्तों पर नहीं।

—राम बजाज

परिवर्तन व प्रणाली में बदलाव

परिवर्तन और प्रणाली के बदलाव में आपके और आपकी औलाद के नजरिये को बदलना होगा। आंखें ज्यादा खोलनी होंगी, कान ज्यादा साफ करने होंगे। समस्या यह है कि समय कम होने के कारण हम सोचने के लिए, उसका विश्लेषण करने के लिए और निष्कर्ष निकालने के लिए रुकते नहीं हैं। अक्सर आप देखते हैं कि जिस प्रकार गाय व्यस्त सड़कों पर बैठी रहती है और आस–पास से तेजी से गुजरने वाले वाहनों का कोई असर नहीं होता क्योंकि उसको पता है कि गुजरने वाला हर वाहन उसे सड़क के बीच देखकर, धीमी गति से बचाते हुए आगे बढ़ जावेगा, उसी प्रकार 99.99,99 प्रतिशत इंसानों पर भी विश्व में काम करने के तरीकों व प्रणालियों में आए बदलाव का कोई असर नहीं होने के कारण, तेज गति से बचने की चेष्टा कर रहे हैं। आम इंसान कुछ करने की बजाय, कुछ होने का इंतजार कर रहे हैं। हमारी दिक्कत यह है कि हमने अपने–आप को एक घेरे में बांध लिया है। अपने और अपने बच्चों के लिए नियम–कायदे और विषय तय कर रखे हैं।

आवश्यक नहीं कि हम भी पूर्वजों की तरह लीक पर ही चलें; हमें खुले मन से नए परिवर्तनों व नई प्रणालियों के साथ नया मार्ग प्रशस्त करना चाहिए। तभी हम और हमारे बच्चे भीतरी शक्तियों का दोहन कर सकेंगे, उनको विकसित कर सकेंगे, अपने स्वयं का भविष्य बना सकेंगे।

सचाई यह है कि सफल से सफल और अमीर से अमीर इंसानों के पास भी दिन के चौबीस घंटे होते हैं, लेकिन वक्त को संभालने में वे हमेशा बड़े बाजीगर होते हैं। इसलिए अमीरी का पैमाना तय करने के लिए चाहिए कि